Teacher's Manual

Carvaan

हिंदी

Preparatory Stage

Class 5

MASTERMIND

Carvaan

हिंदी भाग-5

अध्याय 1

अरमान

कविता-बोध

उ०2. (क) गरीबी में

(ख) हर किसी की मदद करके सुयश कमाना चाहते हैं।

(ग) दुनिया में अपना नाम अमर करने के लिए हमें परोपकारी कार्य करने होंगे तथा मातृभूमि की सेवा करनी होगी।

उ०3. (क) (ii) (ख) (iii) (ग) (ii)

उ०4. (क) है शौक यही, अरमान यही,
हम कुछ करके दिखलाएंगे।
मरने वाली दुनिया में हम,
अमरों में नाम लिखाएंगे।

(ख) रोको मत, आगे बढ़ने दो,
आजादी के दीवाने हैं।
हम मातृभूमि की सेवा में,
अपना सर्वस्व लगाएंगे।

उ०5. जो लोग कठिनाइयों का सामना करने से डरते हैं, जो जीतने की उम्मीद को छोड़ चुके हैं हम उन लोगों के दिलों व दिमागों में परिश्रम के बुझे दीपक को फिर से जलाकर, उनके दिल में एक नया उत्साह जगायेंगे।

उ०6. (क) जो लोग उम्मीद हार कर बैठे हैं उन लोगों के मन में उम्मीद जगानी है।

(ख) हमें निर्धन, असहाय लोगों की सहायता करनी चाहिये।

(ग) आजादी के दीवाने मातृभूमि की सेवा में अपना सर्वस्व लगा देते हैं।

(घ) बच्चे अपनी मातृभूमि का मान बढ़ाना चाहते हैं।

व्याकरण-बोध

उ०1. (क) (i) (ख) (ii) (ग) (iii)
(घ) (iii)

उ०2. ज्ञान – मान दुनिया – मुनिया
छाया – माया सुखी – दुखी
हार – नार सेवा – मेवा
बच्चे – कच्चे धुन – गुन

उ०3. दुनिया – संसार, जग गरीब – निर्धन, दरिद्र
घर – गृह, सदन दीप – दीपक, दीया
वीर – योद्धा, बहादुर जगु – संसार, दुनिया

उ०4. (क) हमें सबका मान करना चाहिए।
हमें सबका कहना मानना चाहिए।
(ख) पेड़ की छाया धूप व बारिश में यात्रियों की सुरक्षा करती है। हमारी छाया हमेशा काली होती है। हर जगह सच्चाई का प्रकाश छाया है।

उ०5. (1) रमा को सजाना पसंद है। (2) मुझे मतदान करो।
रमा को सजा, नापसंद है। मुझे मत, दान करो।

उ०6. गरीब – अमीर सुखी – दुखी
अँधेरा – रोशनी उम्मीद – नाउम्मीद
आगे – पीछे वीर – कायर
बच्चा – बूढ़ा मान – अपमान

उ०7. शौक – मुझे सजने-सँवरने का शौक है।
गरीब – मैं गरीब व्यक्तियों की सेवा करती हूँ।
उम्मीद – मुझे उम्मीद है कि इस बार मैं कक्षा में प्रथम आऊँगी।
सेवा – हमें बड़ों की सेवा करनी चाहिए।
सच्चे – ईश्वर सदैव सच्चे व्यक्ति की मदद करते हैं।

अध्याय 2
खरगोश की चतुराई

पाठ-बोध

उ०2. (क) बरगद के पेड़ के नीचे।
(ख) पानी की
(ग) सरोवर के पास
(घ) सरोवर से क्षमा माँगी क्योंकि उन्होंने सबको तंग कर दिया था।

उ०3. (क) (iii) (ख) (i) (ग) (ii)

उ०4. (क) सरोवर (ख) खरगोशी (ग) क्रोध
(घ) चन्द्रमा (ङ) भयभीत (च) स्वीकार

उ०5. (क) ✓ (ख) ✓ (ग) ✗
(घ) ✗ (ङ) ✓

उ०6. (क) खरगोश जंगल में सरोवर के किनारे रहते थे।
(ख) सभी खरगोश दाँत पीसकर रह गये क्योंकि वह हाथियों से परेशान थे, परन्तु कुछ नहीं कर पा रहे थे।
(ग) खरगोशों के सरदार ने स्वयं को चन्द्रमा का दूत बनकर हाथियों के सरदार से भेंट की।
(घ) हाथियों का सरदार चन्द्रमा को सरोवर में गुस्से से भरा देखकर भयभीत हो गया।
(ङ) हाथियों के सरदार ने चंद्रमा से क्षमा माँगते हुए कहा कि आज के बाद हम किसी को तंग नहीं करेंगे।
(च) प्रस्तुत कहानी हमें सीख देती है कि यदि हम मिल-जुलकर नहीं रहेंगे तो कोई भी स्वीकार नहीं करेगा।

व्याकरण-बोध

उ०1. हाथी – जातिवाचक संज्ञा प्रज्ञा – व्यक्तिवाचक संज्ञा
सरोवर – जातिवाचक संज्ञा पेड़ – जातिवाचक संज्ञा
सचिन – व्यक्तिवाचक संज्ञा गंगा – व्यक्तिवाचक संज्ञा

उ०2. (क) रह गए (ख) बता दी (ग) रही थी
(घ) रहे हैं

उ०3. (क) के, से (ख) के, ने, के, के (ग) को, में
(घ) के, ने (ङ) से, की

उ०4. नाराज – खुश नीचे – ऊपर
दुखी – सुखी शीघ्र – देर
स्वीकार – अस्वीकार गर्मी – सर्दी
गंदा – साफ दूर – पास

उ०5. चन्द्रमा – शशि इंदु निशाकर
पेड़ – तरू वृक्ष विटप
सरोवर – झील तालाब पुष्कर
जंगल – कानन वन अरण्य
पानी – उदक जल नीर
रात – निशा रात्रि रजनी

उ०6. थोड़ी-थोड़ी – बहुत थोड़ी ऊपर-नीचे – ऊपर और नीचे
ठंडी-ठंडी – बहुत ठंडी इधर-उधर – इधर और उधर
जल्दी-जल्दी – बहुत जल्दी माता-पिता – माता और पिता
धीरे-धीरे – बहुत धीरे रात-दिन – रात और दिन

उ०7. विद्यार्थियों की कक्षा फूलों का गुलदस्ता
तारों का मंडल चाबियों का गुच्छा
जूतों का जोड़ा मधुमक्खियों का छत्ता

अध्याय 3
गुलाब सिंह

पाठ-बोध

उ०2. (क) गुड़-चना खाने के कारण।
(ख) जुलूस निकालने के लिए।
(ग) 'गुलाब सिंह, जो अपनी सुंगध बिखेकर चला गया' का अर्थ कि वह मर गया।

उ०3. (क) (ii) (ख) (iii) (ग) (ii)

उ०4. (क) दुलारा (ख) रोली (ग) झंडा
(घ) लथपथ (ङ) शान (च) सुगंध

उ०5. (क) ✗ (ख) ✓ (ग) ✓
(घ) ✓ (ङ) ✗

उ०6. (क) छोटी बहन से नहीं सहा गया कि उसका भाई बार-बार कुछ खाने को माँग रहा है।
(ख) बादशाह ने हुक्म दिया था कि जुलूस नहीं निकलेगा।
(ग) भाई-बहन ने जुलूस को लेकर चर्चा की, बादशाह का हुक्म है कि इस बार जुलूस नहीं निकलेगा।
(घ) बहन ने भाई के माथे पर तिलक लगाया, चावल बिखराए। भाई ने बहन के पैर छुए और विदा ली। बहन ने भाई के सिर पर हाथ फेरा और बलैयाँ लीं।
(ङ) अंत में बाादशाह के सिपाहियों ने झंडे वाले को रोका। वह न रुका। बादशाह के सिपाहियों ने गोली चला दी। बहन ने भाई को गिरते देखा, वह दौड़ पड़ी। भाई खून से लथपथ पड़ा था।

व्याकरण-बोध

उ०1. भारी जुलूस कौमी झंडा कटु स्वर
पुरानी औढ़नी हरा रंग

उ०3. देश – विदेश निर्देश आदेश स्वदेश
रंग – तरंग उमंग संग दंग
अंत – अनंत अंतिम अत्यंत सीमांत

उ०4. झंडा – ध्वज आँख – नयन
माँ – माता अमृत – सोमरस
घर – सदन बादशाह – सम्राट

उ०5. (क) खिला (ख) फहरायेंगे (ग) बना
(घ) निकलेगा (ङ) चली

उ०6. हम, वह, उसका, अपने, उनसे
यह, अपनी, तुम, वैसा, उन्होंने

उ०7. संतोष – धैर्य छाप – निशान
अंत – समाप्त आतंक – जुल्म
अत्याचारी – दुराचारी कटु – कड़वे
कौमी – स्वदेशी बादशाह – सम्राट

अध्याय 4
आंतरिक सुन्दरता

पाठ-बोध

उ०2. (क) चिड़ियों की चहचहाहट से।

(ख) सूरज की रोशनी से।

(ग) बरगद के पेड़ की टहनियों से

उ०3. (क) (iii) (ख) (i) (ग) (ii)

उ०4. (क) रंग-बिरंगी (ख) चहचहाहट (ग) पशु-पक्षी

(घ) चीख

उ०5.

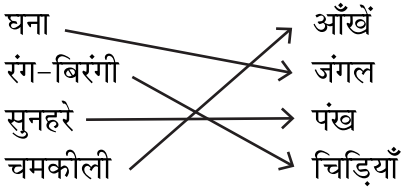

उ०6. (क) चिड़ियों की सरदार एक सुनहरी चिड़िया थी।

(ख) सोना चिड़िया अपने-आपको जंगल की रानी समझने लगी थी क्योंकि उसकी गलतियों पर उसे कोई कुछ नहीं कहता था।

(ग) सोना चिड़िया का सुनहरा शरीर सूरज की तेज किरणों के कारण झुलस गया था।

(घ) सोना चिड़िया की सेवा **बरगद** के पेड़ ने की थी।

व्याकरण-बोध

उ०1.

विशेषण	विशेष्य	विशेषण	विशेष्य
घना	जंगल	नीला	आसमान
मोटी-पतली	चिड़िया	सुनहरे	पंख
सुनहरी	चिड़िया	छोटे-बड़े	जानवर
स्वर्ण	परी	चमकीली	आँखें
		दमकती	काया

उ०2. दर्द + नाक = दर्दनाक कोमल + ता = कोमलता

उ०3. (क) में (ख) का (ग) की

उ०4. घमंड – घमंड करना गलत बात है।

गुमसुम – फेल होने पर राधा गुमसुम रहने लगी।

महत्व – पढ़ाई का जीवन में बहुत महत्व है।

अध्याय 5

भारत

कविता-बोध

उ०3. (क) (ii) (ख) (iii) (ग) (i)

उ०4. मुकुट हिमालय तेरा सुंदर,
धोता तेरे चरण समुंदर।
गंगा-यमुना की है धारा,
जिनसे है पवित्र जग सारा।

उ०5. (क) तू है सब देशों में न्यारा।
(ख) गंगा-यमुना की है धारा, जिनसे है पवित्र जग सारा।
(ग) रामकृष्ण से अंतर्यामी, तेरे सभी पुत्र हैं नामी।
(घ) हम सदैव तेरे गुण गायें।

उ०6. (क) सोहनलाल द्विवेदी।
(ख) सारा जगत पवित्र गंगा-यमुना की जल धारा से होता है।
(ग) भारतभूमि से हमें अन्न, जल, फूल आदि मिलता है।
(घ) राम व कृष्ण के।

व्याकरण-बोध

उ०1. (क) ताज (ख) पानी (ग) विख्यात
(घ) गुणगान

उ०2. पियारा – प्यारा मुकूट – मुकुट
पवीतर – पवित्र जिवाहर – जवाहर
क्रिष्ण – कृष्ण सदेव – सदैव

उ०3. भोजनालय – भोजन का आलय
हिमालय – हिम का आलय
पुस्तकालय – पुस्तक का आलय
कार्यालय – कार्य का आलय

उ०4. प्यारा – हमारा तिरंगा सबसे न्यारा है।

धारा – गंगा की हर धारा दूध सी सफेद है।

नामी – मेरे पिताजी शहर के नामी हलवाई हैं।

सुयश – हर माता-पिता की कामना होती है कि उनके बच्चों को सुयश प्राप्त हो।

अध्याय 6
ओणम पर्व

पाठ-बोध

उ०2. (क) ओणम (ख) राजा महाबली केरल के राजा थे।
(ग) भगवान विष्णु (घ) सर्पाकार

उ०3. (क) (ii) (ख) (iii) (ग) (i)

उ०4. (क) ओणम (ख) महाबली, पराक्रमी (ग) तीन पग
(घ) भगवान विष्णु (ङ) पंबा (घ) हर्षोल्लास

उ०5. (क) ✓ (ख) ✓ (ग) ✗
(घ) ✓ (ङ) ✗

उ०6. (क) ओणम का त्योहार अगस्त व सितम्बर माह में केरल में अपने राजा के आगमन की खुशी में मनाया जाता है।

(ख) देवराज इंद्र भगवान विष्णु के पास अपने सिंहासन को बचाने के लिए गए।

(ग) महाबली के भगवान विष्णु से प्रार्थना की कि मुझे अपनी प्रजा से बहुत स्नेह है। मैं चाहता हूँ कि वर्ष में एक बार अपनी प्रजा से मिलने आ सकूँ।

(घ) ओणम के अवसर पर लोग अपने-अपने घरों की सफाई करके उसे सजाते हैं। पहले दिन से लेकर दसवें दिन तक रंगीन फूलों की सुंदर रंगोली सजाते हैं। रंग-बिरंगे फूलों से प्रवेश द्वार और घर का आँगन सजाते हैं। घरों में विष्णु भगवान की मूर्ति स्थापित की जाती है। विभिन्न प्रकार के सामूहिक गीतों एवं नृत्यों से विष्णु जी की आराधना की जाती है। ओणम का दसवाँ दिन अत्यंत महत्वपूर्ण होता है। इस दिन लोग नए-नए वस्त्र पहनते हैं। अपने मित्रों एवं संबंधियों को आमंत्रित करते हैं। इस दिन हाथियों का भव्य जुलूस भी निकलता है। इस अवसर पर विभिन्न कार्यक्रमों का आयोजन भी किया जाता है। स्त्रियाँ एवं लड़कियाँ सामूहिक

नृत्य करती हैं जिसे 'ककोट्टिक्ली' नृत्य कहते हैं। 'नौका दौड़' प्रतियोगिता ओणम पर्व के मुख्य आकर्षणों में से एक है।

(ङ) वल्लमकलीद नौका प्रतियोगिता का आयोजन पंबा नदी के तट पर किया जाता है। प्रतियोगिता में भाग लेने वाली नौकाएँ सर्पाकार होती हैं। ये नौकाएँ विशेष कारीगरों द्वारा ओणम पर्व के लिए ही बनाई जाती हैं। एक नौका में तीस से चालीस व्यक्ति बैठते हैं। वे सभी परंपरागत पोशाकें पहनकर एक साथ मिलकर एक ही दिशा में नौका चलाते हैं। यह दृश्य अत्यंत मनमोहक होता है। जो दल जीतता है, उसे पुरस्कृत किया जाता है।

व्याकरण-बोध

उ०1. (क) 'ओणम' (ख) यज्ञ (ग) विष्णु, प्रार्थना
(घ) स्वर्ग

उ०2. (क) अचानक (ख) हमेशा (ग) धीरे
(घ) रोज (ङ) आज

उ०3. (क) (i) (ख) (i) (ग) (ii)
(घ) (i)

उ०4. (क) वे (ख) आप
(ग) उन्होंने, अपना (घ) मैं, अपनी

उ०5. (क) स्वदेशी (ख) दयावान (ग) पुरस्कृत
(घ) वार्षिक (ङ) पर्यटक (च) विदेशी

अध्याय 7
दानवीर राजा रुद्रसेन

पाठ-बोध

उ०2. (क) राजा रुद्रसेन

(ख) उनकी लोकप्रियता के कारण।

(ग) अपने भाई को खोने के कारण।

(घ) सामंतों को कड़ा दंड दिया गया क्योंकि उन्हीं के कारण रुद्रसेन की मृत्यु हुई थी।

उ०3. (क) (ii) (ख) (iii) (ग) (i)

उ०4. (क) दानशीलता (ख) विजयी (ग) खुशी

(घ) सामंतों (ङ) आदर-सत्कार

उ०5. (क) ✓ (ख) ✗ (ग) ✗

(घ) ✓ (ङ) ✗

उ०6. (क) सामंतों को राजा के दान कार्य जरा भी पसन्द नहीं थे। वे प्रायः राजा को दान-पुण्य कराते समय हतोत्साहित करते थे।

(ख) राजा रुद्रसेन के भाई ने उनका विद्रोह कर राजा का सिंहासन उनसे छीन लिया।

(ग) प्रजा राजा रुद्रसेन को उनकी दानशीलता के कारण चाहती थी।

(घ) विक्रमसेन को पश्चाताप हो रहा था कि उनके कारण उनके भाई की हत्या हो गई।

व्याकरण-बोध

उ०1. (क) हँसते-हँसते – एक छोटे से चुटकुले को सुनकर मास्टर जी हँसते-हँसते लोट-पोट हो गये।

(ख) गाते-गाते – राजू विद्यालय से घर गाना गाते-गाते चला आता है।

(ग) कुछ-कुछ – परीक्षा के समय बच्चे कुछ-कुछ वाक्य भूल जाते हैं।

(घ) अभी-अभी – पिताजी अभी-अभी ऑफिस से आए हैं।

(ङ) जल्दी-जल्दी – हमें जल्दी-जल्दी खाना नहीं खाना चाहिए।

(च) धीरे-धीरे – खाना धीरे-धीरे सही से चबाकर खाना चाहिए।

उ०2. खूब – बहुत

दरबार – राज्यसभा

जरूर – अवश्य

सिर्फ – केवल

तरफ – ओर

माफी – क्षमा

अध्याय 8
अभिमानी मंगल

पाठ-बोध

उ०2. (क) वह बहुत अच्छी कविताएँ लिखता था।

(ख) जामुन को देखकर।

(ग) चिंटू की बात न समझने के कारण।

उ०3. (क) (ii) (ख) (iii) (ग) (ii)

उ०4. (क) कविताएँ (ख) आदर (ग) मजाक

(घ) गर्म (ङ) धूल (च) शर्मिंदा

उ०5. (क) मंगल ने (ख) चिंटू ने (ग) मंगल ने

(घ) चिंटू ने

उ०6. (क) गाँव के लोग मंगल की कविताएँ सुनकर दाँतों तले उँगली दबा लेते थे।

(ख) मंगल को अपने विद्वान होने पर घमंड था।

(ग) जामुन देखकर मंगल ने पेड़ पर बैठे बच्चों से खाने के लिए जामुन माँगे।

(घ) मंगल की बात सुनकर चिंटू ने मंगल से पूछा कि जामुन गर्म खाने हैं या ठंडे।

(ङ) नन्हें चिंटू की बात का रहस्य मंगल को तब समझ में आया, जब मंगल धूल में सने जामुनों को फूँक मारकर खाने लगा।

(च) हमें अपनी विद्या पर घमंड नहीं करना चाहिये।

व्याकरण-बोध

उ०1. शर्मिंदा होना नाम करना सहन करना

दर्शन करना चिंता करना बात करना

नाश होना संतोष होना

उ०2. ज्ञान – अज्ञान उपस्थिति – अनुपस्थिति
धर्म – अधर्म अर्थ – अनर्थ
स्वीकार – अस्वीकार उत्साह – अनुत्साह
सहज – असहज अन्य – अनन्य

उ०3. (क) जब से किशन की सरकारी नौकरी लगी है तब से वह किसी से **सीधे मुँह बात नहीं करता**।

(ख) गर्म-गर्म जलेबी देखकर मेरे **मुँह में पानी भर आया**।

(ग) अत्यधिक कठिन प्रश्न-पत्र देखकर राहुल ने अपने **दाँतों तले उँगली दबा ली**।

(घ) नेताजी ने अपने भाषण में **बड़ी बातें कहकर** सबको आश्चर्यचकित कर दिया।

(ङ) आज भी लोग महाराणा प्रताप की बहादुरी का **लोहा मानते हैं**।

(च) **फूँक-फूँककर खाने** वाला व्यक्ति कभी जल्दबाजी में काम नहीं करता।

उ०4.

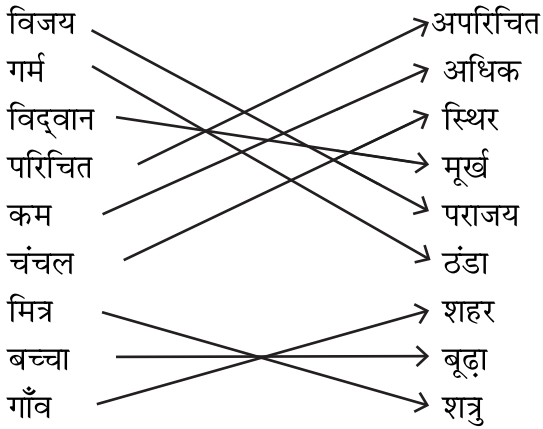

उ०5. कविता – कविताएँ उँगलियाँ – उँगली
पत्तियाँ – पत्ती बच्चे – बच्चा
डाली – डालियाँ ठंडा – ठंडे

चीजें – चीज
आँखें – आँख
गाना – गाने
नन्हें – नन्हा
सड़क – सड़कें
रसीले – रसीला

उ०6. अधिकरण कारक
संप्रदान कारक
कर्ता कारक
संबंध कारक
कर्म कारक
अपादान कारक
अधिकरण कारक
करण कारक

अध्याय 9
कदंब का पेड़

पाठ-बोध

उ०2. (क) श्री कृष्ण

(ख) आँचल फैलाकर माँ ईश्वर से विनती करती होगी कि उसका बच्चा सुरक्षित रहे।

(ग) नहीं।

(घ) वे नटखट, चतुर, बुद्धिमान व सबके प्रिय थे।

उ०3. (क) (ii) (ख) (i) (ग) (iii)

उ०4. (क) तुम्हें नहीं कुछ कहता पर मैं चुपके-चुपके आता,
उस नीची डाली से अम्मा ऊँचे पर चढ़ जाता।
वहीं बैठ फिर बड़े मजे से मैं बाँसुरी बजाता,
अम्मा-अम्मा कह बंसी के स्वर में तुम्हें बुलाता।

(ख) तुम घबराकर आँखें खोलतीं, पर माँ खुश हो जातीं,
जब अपने मुन्ना राजा को गोदी में ही पातीं।
इसी तरह कुछ खेला करते हम-तुम धीरे-धीरे,
यह कदंब का पेड़ अगर माँ होता यमुना-तीरे!

उ०5. माँ पुत्र के पेड़ से न उतरने पर, उसे हँसकर मनाती हुई कहती है कि यदि मुन्ना राजा तुम पेड़ से उतर जाओ मैं तो तुम्हें नए खिलौने, माखन-मिसरी, दूध-मलाई व मिठाई खाने को दूँगी।

उ०6. (क) श्रीकृष्ण बनकर यमुना किनारे कदंब के पेड़ पर बैठकर बाँसुरी बजाने की इच्छा हो रही है।

(ख) अपने पुत्र के बंसी के स्वर को सुनकर माँ बाहर तक आ जाती हैं।

(ग) दूध-मलाई, मिठाई, माखन-मिसरी व खिलौने का लालच देती हैं।

(घ) चुपके से नीचे आता और उनके आँचल में छिप जाता है।

व्याकरण-बोध

उ०1. 1. मैं कल बाजार गई थी। (भूतकाल)
2. मैं पढ़ रही हूँ। (वर्तमान काल)
3. कल बिजली नहीं आयेगी। (भविष्यत् काल)

उ०2. चढ़ + ता = चढ़ता बज + ता = बजता
बह + ता = बहता रख + ता = रखता
लिख + ता = लिखता चल + ता = चलता
खेल + ता = खेलता

उ०3. खोलना = बंद करना नीची = ऊपरी
हँसकर = रोकर बैठना = खड़े होना
धीरे = तेज खुश = उदास
बाहर = अन्दर राजा = रंक

उ०4. (क) तो मैं रोज नये-नये फूल देखता।
(ख) तो मैं रोज उछल-कूद करता।
(ग) तो तारों से मेरी दोस्ती होती।

उ०5. नीचे = ऊँचे आता = जाता
जाती = आती तीरे = नीरे
वाली = काली दूँगी = लूँगी

उ०6. का, पर, की

उ०7.

पेड़	= तरू	वृक्ष	कन्हैया	= कान्हा	कृष्ण
माँ	= जननी	माता	पत्ता	= पर्ण	पल
भैया	= भ्राता	बंधु	दूध	= क्षीर	दुग्ध
ईश्वर	= भगवान	ईश	आँख	= नयन	नेत्र

उ०8. बाँसुरी = बाँसुरी कान्हा जी को प्रिय है।
डाली = आम की डाली पर बहुत से बौर आ गये हैं।
स्वर = अपने माता-पिता से प्रेम के स्वर में बात करनी चाहिए।
खुश = हमें सदैव खुश रहना चाहिए।
गुस्सा = गुस्सा करना एक गंदी आदत है।
खिलौने = मेरे पास बहुत से खिलौने हैं।

अध्याय 10

आधुनिकता का प्रभाव

पाठ-बोध

उ०2. (क) दादा जी के साथ गाँव में।

(ख) गाँव का बड़ा स्वाभाविक दृश्य है कि सुबह पशु चरागाह में चरने के लिए ले जाए जाते हैं और शाम को वे अपने-अपने घर लौट आते हैं।

(ग) पशुओं के रहने के स्थान को पशुशाला कहते हैं।

(घ) रेन वॉटर हार्वेस्टिंग से वर्षा के जल को संग्रहित किया जाता है।

उ०3. (क) (i) (ख) (ii) (ग) (iii)

उ०4. (क) शहर (ख) बकरियाँ (ग) जानवरों

(घ) वातावरण (ङ) रफ्तार (च) फसल

उ०5. (क) ✗ (ख) ✓ (ग) ✓

(घ) ✓ (ङ) ✗

उ०6. (क) कमल ने जब बहुत सारी भेड़ें देखी तो दादा जी का हाथ पकड़कर खींचा।

(ख) दादा जी बोले ये लोहे के राक्षस अब गाँव तक भी पहुँच गए हैं पर इनसे खाद के लिए गोबर नहीं मिलता। इनका धुआँ हमारे वातावरण को प्रदूषित कर देता है। गाँव की स्वास्थ्यवर्धक हवा इस धुएँ से जहरीली होने लगी है।

(ग) दादा जी ने बताया तालाब सूख रहा है क्योंकि पेड़ काटे जा रहे हैं तो मिट्टी की पानी को रोकने की शक्ति कम हो गई है। पक्की सड़कें बन जाने से तालाब की तरफ का ढलान भी कम हो गया। बरसात का पानी नालों में बह जाता है।

(घ) जब कमल ने कहा कि वह बड़ा होकर गाँव में ही रहेगा यह सुनकर दादा जी बहुत खुश हुए।

(ङ) दादा जी का विश्वास था कि अब गाँवों का भविष्य उज्जवल होगा।

व्याकरण-बोध

उ०1. चंदा – कुआँ मांगना – माँगना सांस – साँस
गांव – गाँव हंसी – हँसी

उ०2. पानी प्रदूषण मिट्टी
युवतियाँ खेल नवयुवक

उ०3. उत्साह + इत = उत्साहित दूध + वाला = दूधवाला
समाज + इक = सामाजिक नाभिक + ईय = नाभिकीय
झगड़ा + आलू = झगड़ालू सुर + ईला = सुरीला

उ०4. जीवन नौजवान सड़कें
कहानी वातावरण

उ०5. अचानक – कल अचानक मेरे घर मेहमान आ गये।
आश्चर्य – अचानक घर में एक कुत्ता देखकर मैं आश्चर्यचकित हो गया।
दृश्य – मेले का दृश्य अविश्वसनीय था।
कल्पना – घूमने जाने की कल्पना से ही मैं खुश हो जाता हूँ।
उत्साहित – पार्क में झूलें देखकर बच्चे बहुत उत्साहित थे।

अध्याय 11
साहसी रेशमा

पाठ-बोध

उ०2. (क) रेशमा को पीलिया था इसलिए उसे घर सफाई में नहीं लगाया।
(ख) रेशमा की दृढ़ता।
(ग) पटाखे से बचाने के लिए रेशमा ने गोलू को धक्का मारा।
(घ) रेशमा जिंदादिल व परिश्रमी लड़की है।
(ङ) टॉफी पाकर।

उ०3. (क) (iii) (ख) (i) (ग) (iii)

उ०4. (क) सफाई (ख) भुलक्कड़ (ग) काम
(घ) हिम्मत

उ०5. (क) ✓ (ख) ✓ (ग) ✘
(घ) ✓

उ०6. (क) त्यौहार आने वाले थे इसलिए सभी लोग सफाई करने में लगे हुए थे।
(ख) रेशमा ने रसोईघर में माँ के साथ डिब्बे व्यवस्थित करने में मदद की।
(ग) माँ ने रेशमा को कुछ सामान लाने के लिए बाजार भेजा। नहीं, यह माँ की अपनी इच्छा नहीं थी बल्कि रेशमा की दृढ़ता के आगे वह झुक गई थीं।
(घ) रेशमा पहिए वाली कुर्सी पर बैठकर अपने सारे कार्य स्वयं करती थी।

व्याकरण-बोध

उ०1.

राजघर	रामकिशन	रजवाड़े
सर्प	शर्मिंदा	रोजमर्रा
ग्रंथ	व्रत	क्रम

उ०2. उप + मंत्री = उपमंत्री
घट + इया = घटिया
लिखा + वट = लिखावट
सम्मान + इत = सम्मानित
बिक + आऊ = बिकाऊ
बे + जान = बेजान
अनु + करण = अनुकरण
चमक + ईला = चमकीला

उ०3. (क) दीया जगमगा रहा था।
(ख) मैं तो मिठाइयाँ खाऊँगा।
(ग) रेशमा जाले उतार रही थी।

उ०4. (क) भाववाचक संज्ञा (ख) व्यक्तिवाचक संज्ञा
(ग) जातिवाचक संज्ञा (घ) व्यक्तिवाचक संज्ञा

उ०5. उत्सुक बुरा
श्रम अच्छा

उ०6. व् + य् + अ + स् + त् + अ
उ + त् + स् + उ + क् + अ
ह् + इ + म् + म् + अ + त् + अ
न् + इ + र् + भ् + अ + र् + अ

अध्याय 12
पथ मेरा आलोकित कर दो

कविता-बोध

उ०2. (क) पंछी से

(ख) चलना।

(ग) धरती को स्वर्ग बनाने की।

उ०3. (क) (ii) (ख) (ii) (ग) (iii)

उ०4. मैं नन्हा-सा पथिक विश्व के
पथ पर चलना सीख रहा हूँ,
मैं नन्हा सा विहग विश्व के
नभ में उड़ना सीख रहा हूँ।
पहुँच सकूँ निर्दिष्ट लक्ष्य तक
मुझको ऐसे पग दो, पर दो।

उ०5. पंक्तियों के माध्यम से कवि कहते हैं कि इस जग से जितना भी उन्होंने पाया है और जो कुछ भविष्य में पायेंगे, उससे अधिक वो अपना योगदान इस जग को दे सकें यही उनकी मनोकामना है।

उ०6. (क) कवि ने अपना पथ आलोकित करने की प्रार्थना की।

(ख) कवि नन्हा पथिक है और अभी विश्व के पथ पर चलना सीख रहा है।

(ग) कवि की मनोकामना है कि जितना धरती से पाया है उससे अधिक धरती को दें और इसे स्वर्ग बना दें।

(घ) कवि मंगलमय वरदान माँग रहा है।

व्याकरण-बोध

उ०1. (क) हमें जल्दी घर जाना था पर वर्षा के कारण देर हो गई।
तितली के पंख रंग बिरंगी हैं।

(ख) बच्चे प्रार्थना करके ईश्वर से वरदान मांग रहे हैं।
श्यामा के लिए वर मिल गया है।

(ग) बच्चों के लिए उनकी माँ ही सारा जग है।
रात के लिए पानी जग में रखा है।

(घ) अध्यापक बच्चों से प्रश्न-उत्तर कर रहे हैं।
उत्तर दिशा चार दिशाओं में से एक है।

उ०2. (क) (iv) (ख) (i) (ग) (ii)

उ०3.

पथिक	– राही	यात्री	मुसाफिर
नवल	– नया	नव	नवीन
नभ	– आकाश	अंबर	आसमान
पथ	– रास्ता	राह	मार्ग
विहग	– पंछी	खग	विहग
विश्व	– दुनिया	संसार	जग
धरती	– वसुंधरा	भूमि	धरा

उ०4. (क) परोपकारी (ख) नभचर (ग) आस्तिक
(घ) आभारी (ङ) अनंत (च) नास्तिक
(छ) कृतघ्न

उ०5.

न् + ह	= न्ह	नन्हा	कान्हा
च् + च	= च्च	खच्चर	सच्चा
म् + म	= म्म	मम्मी	अम्मा
स् + व	= स्व	स्वयं	स्वावलंबी
स् + त	= स्त	स्तम्भ	मस्त

उ०6.

नन्हा	= विशाल	धरती	= अंबर
स्वर्ग	= नर्क	मंगल	= अमंगल
घर	= वधू	अधिक	= कम

उ०7.

पथ	= रास्ता	नवल	= नया
विहग	= पंछी	निर्दिष्ट	= बतलाया हुआ
तम	= अंधेरा	वर	= वरदान

उ०8. आलोकित = ईश्वर से अपना पथ आलोकित करने का वरदान बच्चे माँग रहे हैं।

रश्मियों = सूरज की रश्मियाँ चारों ओर फैली हैं।

विश्व = विश्व में प्रदूषण एक गहन समस्या है।

निर्दिष्ट = बच्चों का लक्ष्य निर्दिष्ट है।

लक्ष्य = वीरों का लक्ष्य अपनी मातृभूमि की रक्षा है।

मनोकामना = मेरी मनोकामना है कि मैं भी देश के लिए कुछ करूँ।

मंगलमय = सैनिकों के मंगलमय की कामना सब करते हैं।

अध्याय 13

रोम का एक भयानक दिन

पाठ-बोध

उ०2. (क) भीड़ में बूढ़े और बच्चे, युवक और युवतियाँ एवं मजदूर और किसान थे।

(ख) होरेशस ने।

(ग) युद्ध करके।

(घ) वीरों की।

उ०3. (क) (i) (ख) (i) (ग) (iii)

उ०4. (क) बच्चे (ख) रोम (ग) नदी

(घ) तंग (ङ) जयनाद (च) सम्मान

उ०5. (क) ✓ (ख) ✗ (ग) ✓

(घ) ✓ (ङ) ✗ (च) ✗

उ०6. (क) पुल को तोड़ देने की राय होरेशस ने दी क्योंकि रोम के अन्दर आने का केवल यही एक रास्ता था।

(ख) रोम में प्रवेश करने के लिए एकमात्र रास्ता नदी का पुल था।

(ग) रोम के लोगों ने खुशी से जयनाद किया क्योंकि उन्होंने रोम में शत्रु सेना को आने से रोक दिया था।

(घ) होरेशस नदी में जान बचाने के लिए कूदा।

(ङ) होरेशस बहादुर व समझदार व्यक्ति था।

व्याकरण-बोध

उ०1. शत्रु – दोस्त प्रसन्न – उदास

जीत – हार बहादुर – कायर

आसान – कठिन बुद्धिमान – मूर्ख

उ०2. (क) **शत्रुओं** के पास हथियार था।

(ख) **मजदूरों और किसानों** के हाथ में हँसिया था।

(ग) शत्रु **शहरों** को जीतकर आ रहा था।

(घ) **खेतों** को रौंदती हुई सेना चली आ रही थी।

उ०3. सैनिक – स् + ऐ + न् + इ + क + अ
शत्रु – श् + अ + त् + र् + उ
बुद्धि – ब् + उ + द् + ध् + इ
अंतिम – अ + न् + त् + इ + म् + अ
क्रोध – क + र् + ओ + ध् + अ

उ०4. घुड़सवार – सवार, वार, रघु, घुस, सर, रस
जानवर – जान, वर, जा, नव, जन, नर
पहुँचकर – पहुँच, कर, चर, पक, पच
मजदूर – दूज, दूर, मर, जर

उ०5.

राधा	क्रम	ट्रक	मार्ग
राजस्व	ग्रह	ड्रम	कर्म
राजा	ध्रुव	ट्रेन	धर्म
कायर	शुक्र	ड्रामा	आशीर्वाद

उ०6. (क) रोम में हलचल सी मच गई।
(ख) उस भीड़ में बच्चे और बूढ़े थे।
(ग) एक सेना चली आ रही थी।
(घ) वे पुल को तोड़ने में जुट गये।
(ङ) शत्रु की सेना क्रोध से चिल्ला उठी।
(च) उन्होंने उनकी वीरता के गीत गाये।

उ०7. हलचल – रोम में हलचल **मच** गई।
मुसीबत – रोम पर मुसीबत आ गई।
सेना – सेना ने अचानक लोगों पर धावा बोल दिया।
मीनार – रोम में ऊँची मीनार एक ही थी।
मजबूत – पुल बहुत मजबूत था।
आश्चर्य – सेना से तीन लोगों ने ही जीत हासिल करा दी यह बात आश्चर्य से भरपूर है।

अध्याय 14
दोस्त से मिली सीख

पाठ-बोध

उ०2. (क) आटा पिसवाने चक्की पर।

(ख) माँ ने पहली बार वेदांत को कहा कि तू नहीं जायेगा तो फिर कौन जायेगा।

(ग) विमल की दुकान पर पहुँचकर वेदांत ने देखा और यह देखकर उसका मुँह आश्चर्य से खुला रह गया।

(घ) स्वावलंबन का।

उ०3. (क) (iii) (ख) (ii) (ग) (i)

उ०4. (ख) आटा (ग) डिब्बा (घ) साइकिल

(ङ) झाड़ू (च) स्वावलंबी

उ०5. (क) माँ ने (ख) वेदान्त ने

(ग) आटा चक्की वाले ने (घ) वेदांत ने

(ङ) विमल ने

उ०6. (क) माँ ने वेदांत से गेहूँ पिसवाने के लिए कहा क्योंकि उनका सेवक पिछले चार-पाँच दिनों से छुट्टी पर था और अगले चार-पाँच दिनों तक उसके आने की कोई संभावना भी नहीं थी।

(ख) वेदांत को काम करने से शर्म आ रही थी क्योंकि उसने पहले यह काम नहीं किया था।

(ग) वेदांत ने अपना पक्ष मजबूती से रखते हुए कहा कि माँ मैंने यह काम पहले कभी नहीं किया।

(घ) विमल ने कहा था कि आज सेवक नहीं आया है इसलिए मैं ही यह काम कर रहा हूँ और फिर सेवक रहे न रहे, इससे क्या फर्क पड़ता है। उसके रहने पर भी मैं कई बार झाड़ू लगा चुका हूँ। यह सुनकर वेदांत का मुँह आश्चर्य से खुला-का-खुला रह गया।

(ङ) स्वावलंबी होने का सही अर्थ पता चलने पर पैसे देकर वेदांत ने आटे का डिब्बा साइकिल के पीछे रखा और घर की ओर रवाना

हुआ। अब वह गर्दन नीची नहीं बल्कि गर्व से ऊँची किए चल रहा था।

व्याकरण-बोध

उ०1. (क) क्यों/कैसे (ख) कब (ग) कौन
(घ) कहाँ (ङ) क्यों

उ०2. (क) श्याम राधा की **राह देख** रहा होगा।
(ख) कुछ बालक **सिर पर पड़ने** के बाद ही कार्य करते हैं।
(ग) मोहन अपनी माँ को हर कार्य के लिए **टका सा जवाब** देता है।
(घ) जीतने के बाद सूरज का **अंग-अंग मुस्कुरा** रहा था।

उ०3. हँसी – ह् + अं + स् + ई
पाऊँगा – प् + आ + ऊ + अं + ग् + आ
गेहूँ – ग् + ए + अं + ह् + ऊ
घंटा – घ् + अं + ट् + आ
देखूँगी – द् + ए + अं + ख + ऊ + ग् + ई

अध्याय 15
कबीर के दोहे

पाठ-बोध

उ०2. (क) मिट्टी कुम्हार से कहती है कि जैसे तू आज मुझे रौंद रहा है एक दिन मैं तुझे स्वयं में मिला लूँगी।

(ख) सच बोलने वालों के हृदय में भगवान निवास करते हैं।

(ग) कबीरदास के अनुसार जिसने प्रेम की भाषा को पढ़ लिया हो, वह पंडित है।

(घ) हमारे मधुर बोलने की आदत से दूसरों को शीतलता मिलती है।

उ०3. (क) (iii) (ख) (i) (ग) (ii)

उ०4. (क) गुरु गोविंद दोऊ खड़े, काके लागूं पांय।
बलिहारी गुरु आपनो, गोविंद दियो बताय ।।

(ख) रूखा-सूखा खाइके, ठंडा पानी पीव।
देख पराई चूपड़ी, मत ललचावे जीव ।।

(ग) ऐसी बानी बोलिए, मन का आपा खोय।
औरन को शीतल करे, आपहुँ शीतल होय।।

उ०5. (क) कबीर जी कहते हैं, माटी कहती है कुम्हार से कि आज तू मुझे रौंद रहा है एक दिन ऐसा आयेगा। जब मैं तुझे अपने अंदर समा. हित कर लूँगी।

(ख) कबीर जी कहते हैं कि सच बोलने के बराबर कोई तप नहीं है और झूठ के बराबर कोई पाप नहीं है। जिसके हृदय में सच रहता है उसके हृदय में स्वयं ईश्वर निवास करते हैं।

(ग) इस दोहे में कबीर दास ने संतुलित होने पर बल दिया है। हमें सभी चीजों में संतुलन बनाकर रखना चाहिए। जिस प्रकार अधिक बोलने वाले व्यक्ति अनावश्यक बातों से अन्य को परेशान कर सकता है और चुप रहने वाला व्यक्ति अपने भाव प्रकट नहीं कर पाता उसी प्रकार अधिक विनम्रता और अधिक कठोरता भी व्यक्ति के लिए हानिकारक है।

उ०6. (क) गुरु को कबीर जी ने ईश्वर का स्थान दिया है।

(ख) कबीर जी ने आज का काम कल पर न छोड़ने की सलाह दी है क्योंकि कल का कोई भरोसा नहीं है।

(ग) सच बोलना सबसे बड़ा तप है।

(घ) अति के बारे में कबीर जी कहते हैं कि अत्यधिक बोलना, चुप रहना, दयावान होना या निष्ठुर होना ठीक नहीं है अर्थात अधिकता हानिकारक होती है।

(ङ) मीठी वाणी से बोलने वाले व सुनने वाले दोनों की शीतलता प्रदान होती है।

व्याकरण-बोध

उ०1. (रूखा-सूखा) खाइ के, (ठंडा) पानी पीव।
देख (पराई) चूपड़ी, मत ललचावे जीव।।

उ०2.

पंडित	=	पंडितों	आँख	=	आँखों
देव	=	देवों	मित्र	=	मित्रों
पुत्र	=	पुत्रों			

उ०3.

साँच	=	सच	हिरदै	=	हृदय
आपा	=	अभिमान	दोऊ	=	दोनों
काल	=	कल	माटी	=	मिट्टी
पोथी	=	ग्रंथ	आक्षर	=	अक्षर

उ०4.

आपहुँ	=	स्वयं भी	बानी	=	वाणी
सीतल	=	शीतल	परलय	=	प्रलय
पीव	=	पीजिए (पीना)	आखर	=	अक्षर
रौंदे	=	मलना	चूपड़ी	=	घी लगी रोटी (पकवान)

उ०5.

प्रलय	=	सुनामी ने प्रलय ला दी।
शीतल	=	शीतल जल गर्मियों में राहत देता है।
सत्य	=	सत्य बोलना तप समान है।
वाणी	=	मधुर वाणी बोलना सबसे अच्छा गुण है।
जिसके	=	जिसका काम हो उसी को करना चाहिए।
धन	=	हमें मन लगाकर पढ़ाई करना चाहिए।

अध्याय 16

कुत्ते का महत्व

पाठ-बोध

उ०2. (क) लेखक से झगड़ा होना।

(ख) कुत्ता मंदिर वाली गली की ओर भाग गया क्योंकि लेखक की पत्नी सीढ़ियों पर से उसे मारने के लिए दौड़ी थी।

(ग) लेखक ने शुभ सूचना दी कि वह कुत्ते को छोड़ आया।

(घ) चोरी होने की घटना।

उ०3. (क) (iii) (ख) (ii) (ग) (i)

उ०4. (क) रात (ख) घुड़सवार (ग) चैन

(घ) शोरगुल (ङ) रपट

(च) मुहल्लेवाले, बेजुबान जीव

उ०5. (क) ✗ (ख) ✓ (ग) ✓

(घ) ✓ (ङ) ✓

उ०6. (क) लेखक व उसकी पत्नी के बीच झगड़ा एक आवारा कुत्ते को लेकर होता था।

(ख) कुत्ता लेखक के घर बार-बार आता था क्योंकि लेखक के बच्चे उसे खाना व दूध देते थे और वह भी उनसे प्रेम करता था।

(ग) बच्चे कुत्ते से बहुत प्यार करते थे क्योंकि वे उसे रोटी देते थे, सुबह-शाम अपने हिस्से का दूध भी पिलाते थे। बच्चे उसके साथ खेलते भी थे।

(घ) वहाँ पुलिस इंस्पेक्टर उल्टा उसी पर बरसा कि वह इतनी गहरी नींद क्यों सोया था। कमरे में आदमी के होते हुए इतना सामान उठाकार कोई ले जा सकता है। फिर ऐसी चोरियाँ आए दिन होती रहती हैं– इतना बड़ा शहर है, चालीस लाख आबादी का।

व्याकरण-बोध

उ०1.

त्न	रत्न	प्रयत्न	च्च	उच्च	सर्वोच्च
ध्य	अध्याय	ध्यान	त्त	सत्तर	छत्ता

उ०2. निर्+जीव – निर्जीव बिना जीवन के
निर्+बल – निर्बल बिना बल के
निर्+धन – निर्धन बिना धन के
दुर्+घटना – दुर्घटना बुरी घटना
दुर्+गुण – दुर्गुण बुरा गुण
दुर्+भावना – दुर्भावना बुरी भावना

उ०3. **पिल पड़ना** – चोर को देखकर गुस्साई भीड़ उस पर पिल पड़ी।
मुँह लगना – बच्चों ने कुत्ते को मुँह लगा रखा था।
पाँव पसारकर सोना – रात को सभी कुत्ते के जाने पर पैर पसारकर सोये।
आँखें खुली की खुली रह जाना – चोरी होने पर लेखक की आँखें खुली की खुली रह गईं।
पैरों तले जमीन खिसकना – गहने चोरी की बात सुनकर लेखक की पत्नी के पैरों तले जमीन खिसक गई।

उ०4. ऊँचा सुंदर चंचल मुँह साँस
कंठ आँगन वहाँ गंगा चंदन

अध्याय 17

प्यारा घर

पाठ-बोध

उ०2. (क) घर में।

(ख) घर परिवार द्वारा बसाया जाता है जबकि मकान विक्रय हेतु बनाया जाता है और विभिन्न उद्देश्यों के लिए प्रयोग होता है। घर में सब एक-दूसरे से प्रेम करते हैं परन्तु मकान में नहीं।

(ग) स्वयं करें।

उ०3. (क) (i) (ख) (i) (ग) (ii)

उ०4. (क) दर्द (ख) मकान (ग) प्रेमपूर्वक

उ०5. (क) ✗ (ख) ✓ (ग) ✗

उ०6. (क) घर के सभी लोगों के बीच लगाव और प्रेम, परस्पर एक-दूसरे के लिए चिंता तथा अपनेपन और जिम्मेदारी की भावना, ये सब घर की विशेषताएँ हैं।

(ख) धर्मशाला में रहने के लिए जगह, खाने के लिए भोजन तो मिल सकता है परन्तु स्नेह या प्रेम नहीं मिलता।

(ग) घर के सदस्यों के बीच प्रेम और स्नेह होना चाहिए।

व्याकरण-बोध

उ०1. (क) मंदिर – देवालय, मठ (ख) वायु – हवा, पवन

(ग) प्यार – प्रेम, स्नेह (घ) स्वच्छता – सफाई, शुद्धता

उ०2. (क) मंदिर – घर एक मन्दिर है।

(ख) परिवार एक अनूठा प्रेम का संग्रहालय है।

(ग) मन्दिर जाते समय जूतों को बाहर उतारना चाहिए।

उ०3. (क) चाचा – चाची (ख) मामा – मामी

(ग) पापा – मम्मी (घ) बुआ – फूफा

अध्याय 18

आत्मरक्षा

पाठ-बोध

उ०2. (क) डाकुओं का।
(ख) डाकुओं के आतंक को समाप्त करने का।
(ग) योद्धा।
(घ) मंत्री।

उ०3. (क) (i) (ख) (ii) (ग) (i)
(घ) (ii)

उ०4. (क) प्रजापालक (ख) आतंक (ग) तैनात
(घ) विश्वासघात (ङ) संतोष

उ०5. (क) ✓ (ख) ✓ (ग) ✓
(घ) ✗ (ङ) ✓

उ०6. (क) मंत्री को चिंता रहती थी कि उनकी प्रजा आत्मरक्षा करना नहीं जानती है।

(ख) डाकू को पकड़ने में यह कठिनाई थी कि वह बहुत चालाक था। वह जहाँ एकबार चोरी करता तो कोई बीस कोस दूर जाकर दूसरी लूट करता था।

(ग) डाकू का चेहरा देखकर राजा ने कहा कि तुमने विश्वासघात किया है। तुम प्रजा के रक्षक नहीं, भक्षक निकले। तुम्हें धन की आवश्यकता थी तो मुझसे माँग लेते। प्रजा ने कहा– तुमने देश से विश्वासघात किया है।

व्याकरण-बोध

उ०1. (क) झूठे – झूठ (ख) कायर – कायरता
(ग) वीर – वीरता (घ) सत्य – सत्यता
(ङ) भय – भयानक (च) साहस – साहसिक

उ०2. (क) वे (ख) उनका
(ग) वह (घ) उसने